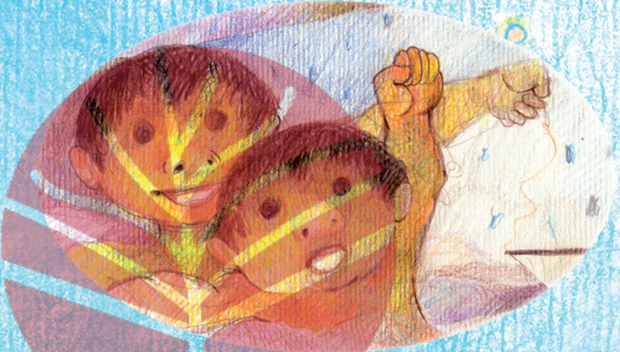
नेहरू बाल पुस्तकालय

# बालगीत

प्रत्यूष गुलेरी



चित्रांकन
अभिषेक कुमार



nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

## नील गगन पर चमकें तारे

नील गगन पर चमकें तारे।
सुंदर सुंदर प्यारे प्यारे ॥

कभी दीखते ढेरों सारे।
लगते करते खूब इशारे ॥

चंदा के संग चलते रहते।
सर्दी गर्मी सहते रहते ॥

भाता इनको आना जाना।
आंख झपकते झट छिप जाना ॥

आंगन में हम खाट बिछाए।
देखा करते दूध नहाए ॥

कठिन बड़ा है इनको गिनना।
इनसे न हो सकता मिलना ॥



# जाड़ा बुरा है मेरे भाई

बूढ़ों पर सच आफत आई।
जाड़ा बुरा है मेरे भाई॥

मन लगता न आज कहीं है।
दुश्मन खाना बना दहीं है॥

दांत घड़ी से टिक-टिक बजते।
आग मिले सुख सांसें भरते॥

ठिठुर ठिठुर दम टूट रहा है।
जाड़ा तन मन लूट रहा है॥

धूप खिले तो दौड़े आएं।
मुट्ठी भर तन को गरमाएं॥



## बरसो बदरा

उमड़ उमड़ कर बादल छाए।
बच्चे खुशी मनाते आए॥

बरसो बदरा इतना पानी।
तौबा करे हमारी नानी॥

हम बच्चों की बोले टोली।
पानी से भर दे यह झोली॥

गाएंगे मस्ती का गाना।
आज हमें है खूब नहाना॥

चुन्नू दौड़े भागे आओ।
कागज की नौका ले लाओ॥

पार लगाएं अपनी नौका।
आज मिला है ऐसा मौका॥



## बरसात के दिन

महीने बीते बीते दिन।
फिर लौटे बरसात के दिन ॥

घना अंधेरा छाया है।
बादल पानी लाया है ॥

छम-छम पानी बरसेगा।
नहीं पपीहा तरसेगा ॥

मेंढक भी टर्राएंगे।
गाज बाज से गाएंगे ॥

सरद हवाएं आएंगी।
सबका मन बहलाएंगी ॥



## बादल छाए

उमड़ उमड़ कर बादल छाए।
शोर मचाते बच्चे आए ॥

टोली की टोली आ नाची।
घर आंगन में देखे चाची ॥

सब गाएं मस्ती का गाना।
भूले बच्चे ठौर ठिकाना ॥

कब से हम थे कितना तरसे।
मेघा राजा तुम ना बरसे ॥

कहती मेरी बूढ़ी नानी।
बरसेगा धरती पर पानी ॥

तैराएं कागज की नौका।
दे बदरा हमको यह मौका ॥



## चंदा मामा

मंटू जब भी खिड़की खोले।
लगता चंदा कुछ कुछ बोले॥

चलना मेरा काम रहा है।
चंदा मामा नाम रहा है॥

जीवन में तुम बढ़ना सीखो।
पर्वत टीले चढ़ना सीखो॥

सबसे मीठा शीतल बोलो।
जो बोलो उसको तुम तोलो॥

जो संकट से लेता टक्कर।
उसको मिलती चूरी शक्कर॥



## बरसे पानी

गरजे बादल घम घम घम।
बरसे पानी छम छम छम॥

दिल करता है खूब नहाऊं
मम्मी के मैं हाथ न आऊं
गीत खुशी के ऐसे गाऊं
पापा भूलें सारे गम।

चुन्नू मुन्नू तुम भी आओ
आओ मिलकर ताल बनाओ
छप छप पानी खूब गिराओ
वर्षा जाए कहीं न थम।

कुछ ठंडी लग सकती है
दांत घड़ी बज सकती है
दुनिया भी हंस सकती है
तोड़ न देना तुम दम खम।



# सूरज

जल देता है गर्मी देता।
दुनिया से कुछ कभी न लेता॥

समता का है पाठ पढ़ाए।
घर घर में उजियारा लाए॥

जीव जंतु भी इस पर निर्भर।
सागर नदियां कुएं निर्झर॥

जग का तम है दूर मिटाता।
बदरा में जा झट छुप जाता॥

जब निकले घर चमके मेरा।
सूरज करता नया सवेरा॥



## पाजी कौआ

कौआ कां कां करता है।
नहीं किसी से डरता है॥

उड़ता है आकाश में।
रोटी की तलाश में॥

कौए का रंग काला है।
किसने इस पर डाला है॥

बच्चो! उड़ाओ ताली से।
रोटी खा गया थाली से॥

एक आंख का काना है।
पाजी सबने माना है॥



## बिल्ली मौसी

बिल्ली आई बिल्ली आई।
डर से दुबके चूहे भाई ॥

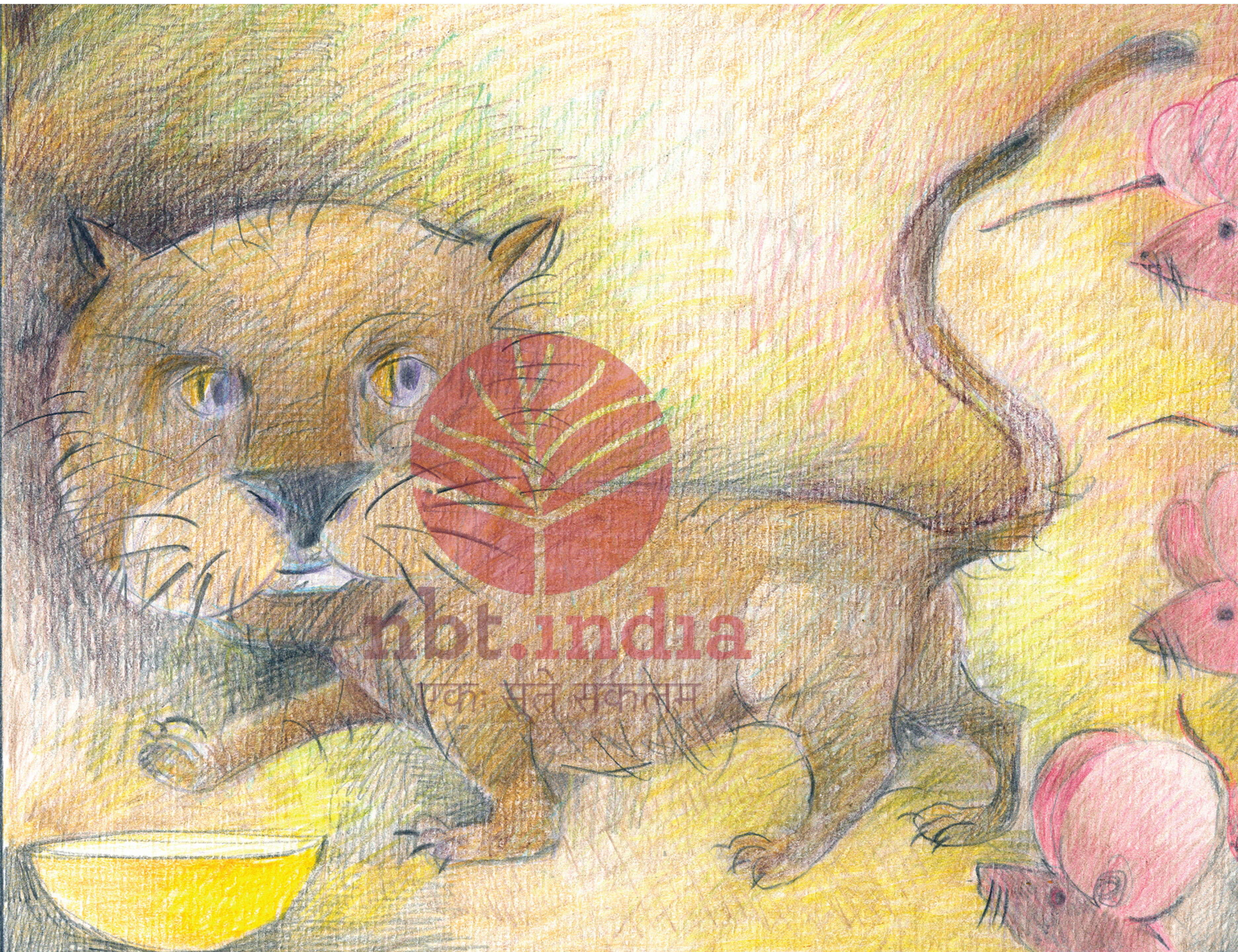
इधर उधर सब सूंघ रही है।
कूं कूं करके ऊंघ रही है ॥

शोर मचाते बच्चे आए।
मौसी तू क्यों चूहे खाए?

हमने रखी दूध मलाई।
आज नहीं है घर में ताई ॥

संग हमारे खेलो खेल।
चलो बनाएं प्यारी रेल ॥

रेल का इंजन तुम बन जाओ।
प्यारी मौसी मान भी जाओ ॥



## पिल्ला एक पिताजी लाए

खुशी से सोनू नहीं समाए।
पिल्ला एक पिताजी लाए॥

बच्चों की टोली ने घेरा।
सब कहें यह पिल्ला मेरा॥

मीनू दूध कटोरा लाई।
बिस्कुट लेकर चीनू आई॥

अम्मा ने आकर चुपकारा।
जैकी रख लो नाम है प्यारा॥

बिस्तर और खिलौने लाऊं।
आज तो अपने साथ सुलाऊं॥

दितु लगी सबको समझाने।
रख दो इसको अभी ठिकाने॥

तब इसको हम अच्छा मानें।
मालिक दुश्मन सब पहचाने॥



# तितली

फूल फूल पर उड़ती तितली।
रंग बिरंगी पीली तितली॥

सुंदर अपने पर फैलाती।
बच्चों का है मन ललचाती॥

पीली तितली आगे आगे।
सुब्बू उसके पीछे भागे॥

नन्ही तितली उड़ ना पाई।
सुब्बू पकड़ उसे ले आई॥

कापी में रख उसे दबाया।
मारी तितली रहम न आया॥

पापा ने देखा तो डांटा।
"खाएगी तू मुझसे चांटा॥

आगे से मत तितली छूना।
पाप लगेगा दिन दिन दूना"॥



# बात पते की

बात पते की कहते नाना।
चुन्नू मुन्नू अव्वल आना॥
जब पढ़े तुम पूरा साल।
याद किए हैं सभी सवाल॥
इम्तहान से मत घबराना।
चुन्नू मुन्नू अव्वल आना॥

मन लगाकर पढ़ जाओगे।
खुशियां जीवन की पाओगे॥
नकल बुरी है कहते नाना।
चुन्नू मुन्नू अव्वल आना॥

मेहनत रंग दिखाती अपना।
पूरा होता सोचा सपना॥
देश तुम्हीं को है चमकाना।
चुन्नू मुन्नू अव्वल आना॥

सद् संगत में अगर रहोगे।
संकट से भी नहीं डरोगे॥
मानेगा फिर बात जमाना।
चुन्नू मुन्नू अव्वल आना॥



# वीर बनो

वीर बनो तुम धीर बनो।
भारत की तकदीर बनो ॥

सज्जन और सुशील बनो।
गुणवंत बनो गुणशील बनो ॥

तुम हर किसी का मीत बनो।
तुम नए कवि का गीत बनो ॥

मान बनो और शान बनो।
तुम भारत वीर जवान बनो ॥

तुम सब के सब इक प्राण बनो।
कोई सुंदर मंगल गान बनो ॥



# मुन्ना

मुन्ना बहुत निराला है।
नानी मां ने पाला है ॥

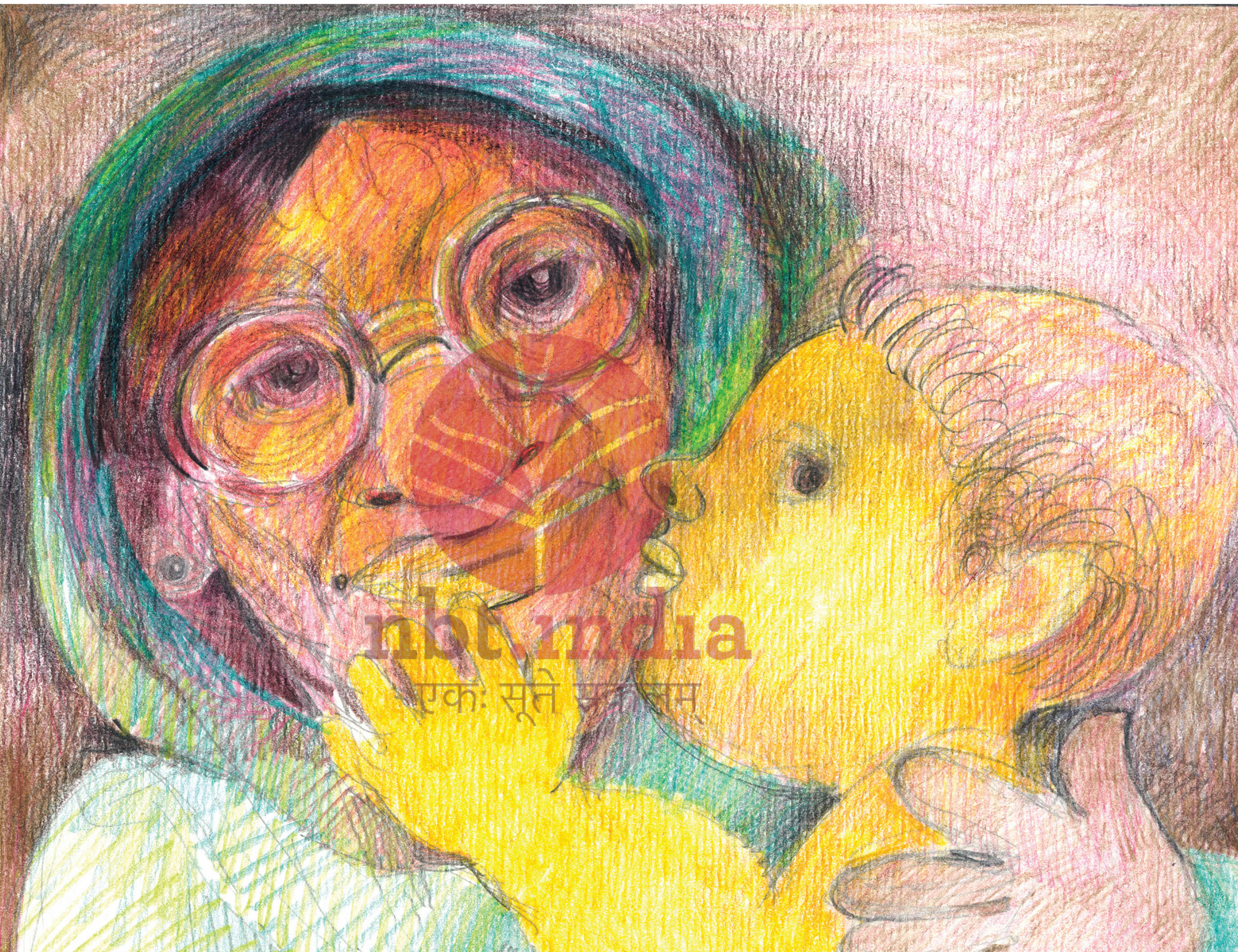
नानी इसको भाती है।
लड्डू खूब खिलाती है ॥

मुख चूमे यह नानी का।
काम करे शैतानी का ॥

दौड़ा भागा पानी को।
पकड़ नचाया नानी को ॥

नानी कुछ शरमाती है।
मुन्ना! मुन्ना! गाती है ॥

नानी इतना फूल गई।
नाना का दुख भूल गई ॥



# मेला

ढोल नगाड़े बजे शहनाई।
यहीं लगा है मेला भाई॥

घोड़ा चढ़ो हिंडोला मोड़ो।
जात-पात का टंटा छोड़ो॥

गहनों का भरपूर मजा है।
खिलौनों से बाजार सजा है॥

सोनू मोनू मत शरमाओ।
चाट पकौड़ी कुलफी खाओ॥

चीख रहा मोटू हलवाई।
घर ले जाओ स्वाद मिठाई॥

सब कुछ आज लुटा सस्ते में।
खाना सब रहा बस्ते में॥

मेले में जब मिल जाते।
बच्चों के मन खिल जाते॥



## पर्व प्रेम का

गुड़िया कहती आओ भाई।
मैं सुंदर सी राखी लाई ॥

एक साल में दिन यह आया।
मुझको मेरा भैया भाया ॥

मां को अभी बुलाकर लाई।
उसने थाली एक सजाई ॥

मस्तक पर मैं तिलक करूंगी।
मुख में लड्डू खूब भरूंगी ॥

पर्व स्नेह का यह कहलाता।
हम दोनों का पक्का नाता ॥

आजीवन हम एक रहेंगे।
सुख दुख दोनों साथ सहेंगे ॥

भैया मुझसे इतना कहना।
गुड़िया मेरी प्यारी बहना ॥

फिर हम दोनों गले मिलेंगे।
फूल की भांति संग खिलेंगे ॥



# रजिया चली बाजार

रजिया बेटी चली बाजार
घोड़े पर है आज सवार ॥

कपड़ों के हैं क्या ही कहने ।
सुंदर पहने इसने गहने ॥

देखे इधर उधर खुशहाल ।
घोड़े की मदमस्त है चाल ॥

'पापा! खींचो जरा लगाम ।
दिल कर आया खाऊं आम' ॥

आमों के थे ऊंचे दाम ।
उसने लिया कलेजा थाम ॥

पापा बोले 'बिटिया रानी ।
टॉफी खाकर पी लो पानी ॥

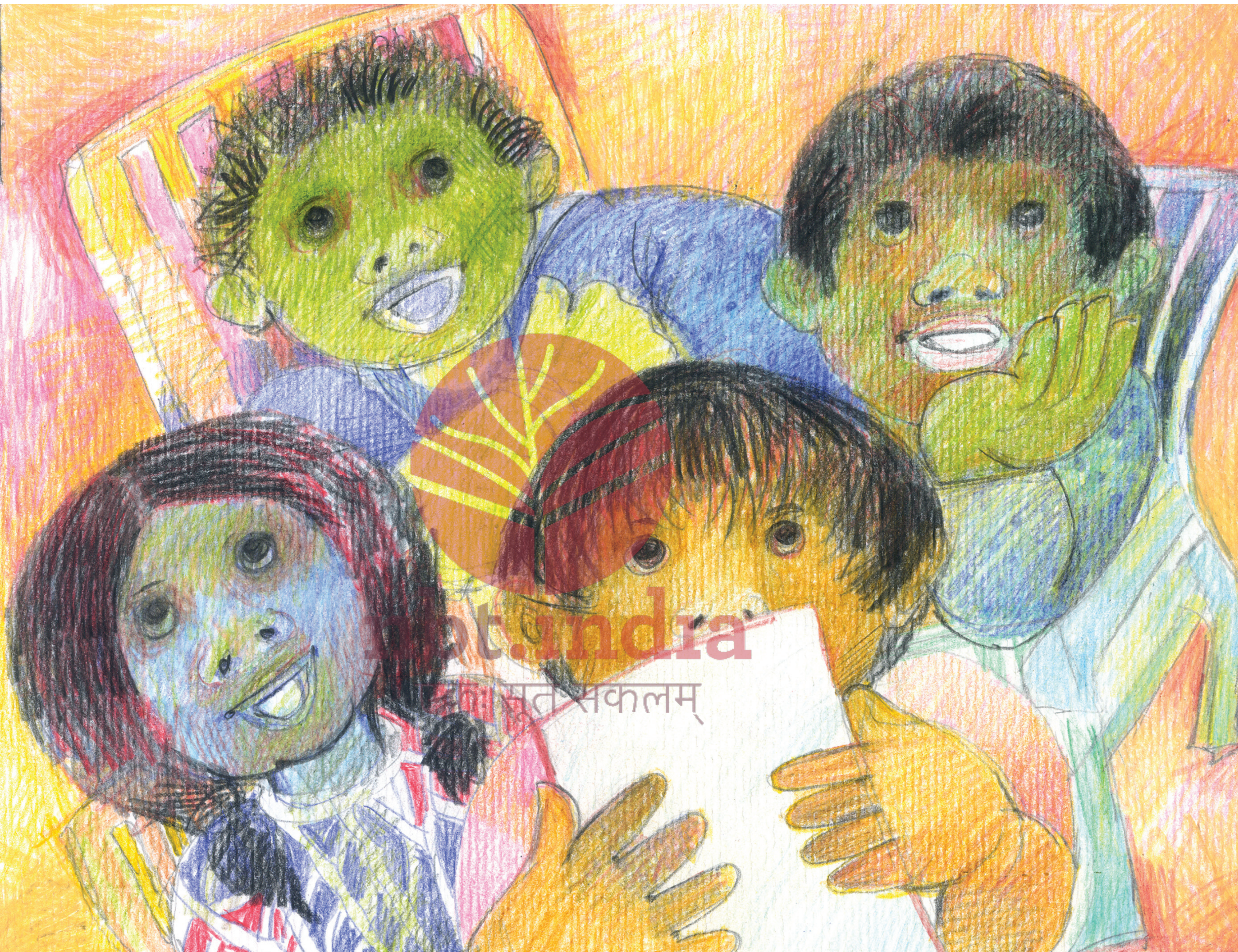
बढ़िया खूब खिलौने ले लो ।
घर में चलकर जी भर खेलो' ॥

बोली रजिया 'पापा आओ ।
सांझ ढली अब घर पहुंचाओ' ॥



## छुट्टी में

दादी का संदेश मिला है।
सोनू आना छुट्टी में ॥
दिल करता है गले लगाऊं।
मन बहलाना छुट्टी में ॥
बातें आकर मीठी मीठी।
मुझे सुनाना छुट्टी में ॥
मन मेरे में लड्डू फूटें।
आम चुराना छुट्टी में ॥
मोनू आया बीनू आया।
सन्नी भी तो आएगा ॥
मिल करके तुम सारे भाई।
गीत सुनाना छुट्टी में ॥
नावें और जहाज बनाना।
रेल चलाना छुट्टी में ॥
राजू को भी लिख भेजा है।
गिरिजा राधा को भी लाए ॥
गोलू ने है मुंह फुलाया।
उसे मनाना छुट्टी में ॥



## छक्कम छक्कम छक्कम रेल

छक्कम छक्कम छक्कम रेल।
धक्कम धक्कम धक्कम रेल॥
इंजन इसको ठेल रहा।
बिना टिकट के जाएं जेल॥

दुल्हन सी यह इठलाती है।
सौ सौ देखो बल खाती है॥
पर्वत घाटी मैदानों में।
लांघ पुलों पर गर्राती है॥

इसने सबको अपना माना।
ऊंच नीच का भेद न जाना॥
सब को सब के घर पहुंचाना।
अपना बदले रोज ठिकाना॥



# मंटू

नए नए मैं लाई फूल।
चला है मंटू आज स्कूल॥
बस्ते में है कलम दवात।
कापी एक किताबें सात॥

केला सेब टिफन में डाला।
मेरा बेटा किस्मत वाला॥

बड़ा बनेगा पढ़ लिखकर।
साहसी होगा और निडर॥

नैतिक गुण उसमें हैं भरने।
भेजूंगी सीमा पर लड़ने॥
कष्ट हरे यह जन जन के।
फूल खिलेंगे हर मन के॥



## आई बस

पौं पौं करती आई बस।
सवार लोग हैं आठ या दस॥

पर्वत टीले चढ़ जाती है।
हाथ दिए झट रुक जाती है॥

रंग है इसका लाल हरा।
छत पर खूब सामान चढ़ा॥

चालक इसका भला बड़ा।
बस को ठीक से करे खड़ा॥

बच्चे झूमें नाचें गाएं।
धम-धम करते चढ़ते जाएं॥



## होली है होली

रंग उड़ाती धूम मचाती।
बच्चों की आई है टोली॥
नाचेंगे हम गाएंगे हम।
रंगों का त्योहार है होली॥

रंग बिरंगे रंग लिए हैं।
गूंज रही होली की बोली॥
बीनू, मीनू, शीला, बिमला।
भर गुलाल की लाई झोली॥

टींकू घर से बाहर आया।
रंग भरी चिपकारी खोली॥
नीले पीले मुंह देखकर।
सब कहते होली है होली॥

आपस के सब बैर भुलाकर।
गले लगाओ कहती होली॥
एक रहे हैं एक रहेंगे।
बच्चों की गाती है टोली॥





nbt.india

एकः सूते सकलम्

इनफिनिटी एडवरटाईजिंग सर्विसिस, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित

nbt.india

एकः सूते सकलम्

nbt.india

एकः सूते सकलम्

ISBN 978-81-237-5586-1

पहला संस्करण : 2009

छठी आवृत्ति : 2019 *(शक 1941)*



Balgeet *(Hindi Original)*

**₹ 70.00**

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in



nbt.india

एकः सूते सकलम्